Ministry of Culture
Government of India

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

कलानिधि विभाग

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

व्याख्यान में आपको सादर आमंत्रित करता है

विषय

“हजारी प्रसाद द्विवेदी और भारतीय संस्कृति”

अध्यक्षता

श्री रामबहादुर राय

अध्यक्ष
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, न्यास

वक्ता

प्रो. अवधेश प्रधान

सेवानिवृत्त प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

स्वागत भाषण एवं परिचय

प्रो. के. अनिल कुमार

विभागाध्यक्ष – कलानिधि
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

19 अगस्त, 2026

सायं 4:30 बजे

स्थान:

समवेत सभागार, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ बिल्डिंग, जनपथ, नई दिल्ली – 110001

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(19 अगस्त 1907-19 मई 1979)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी निबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार थे। सन् 1929 में संस्कृत साहित्य में शास्त्री और सन् 1930 में ज्योतिष विषय में शास्त्राचार्य की उपाधि प्राप्त की। 8 नवम्बर 1930 को हिन्दी शिक्षक के रूप में शान्तिनिकेतन में कार्यारम्भ किया। आचार्य जी का हिन्दी भवन, विश्वभारती के संचालक (सन् 1945-1950) के पद पर तथा सन् 1957 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति हुई। उन्हें सन् 1957 में 'पद्मभूषण' उपाधि से सम्मानित किया गया। सन् 1960-1967 के दौरान पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिन्दी के प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष रहे। 1967 के बाद पुनः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कुछ समय तक निदेशक के पद पर भी रहे। द्विवेदी जी हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला भाषाओं के विद्वान थे। भक्तिकालीन साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। उनकी लिखी दर्जनों से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें से कबीर, नाथ सम्प्रदाय, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, मेघदूतः एक पुरानी कहानी, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, अशोक के फूल, आलोक पर्व (साहित्य अकादमी पुरस्कार), बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय ने वर्षों से प्रख्यात विद्वानों तथा कलाकारों के निजी पुस्तकालयों को उपहार स्वरूप अंगीकार किया है। जो कला एवं सम्बन्धित अध्ययन के क्षेत्र में एक विशेष महत्व रखता है। प्रो. सुनीति कुमार चटर्जी, ठाकुर जयदेव सिंह, डॉ. कपिला वात्स्यायन, श्री देवेंद्र स्वरूप, प्रो. नामवर सिंह एवं श्री श्याम बेनेगल इनमें से कुछ प्रमुख निजी संग्रह हैं। इसी श्रृंखला के अन्तर्गत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री मुकुन्द द्विवेदी ने सन् 1988 को आचार्य जी का 13,000 व्यक्तिगत पुस्तकों का दुर्लभ संग्रह इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय में उपहार स्वरूप भेंट किया। उनके संग्रह में संस्कृत, पाली, प्राकृत और हिन्दी रचनाओं के दुर्लभ संस्करण और आधुनिक भारतीय भाषाओं में रचनात्मक और महत्वपूर्ण लेखन का एक विशाल संग्रह शामिल है। धर्म और दर्शन पर भी बड़ी संख्या में पुस्तकें हैं।

प्रो. अवधेश प्रधान

प्रो. अवधेश प्रधान हिन्दी साहित्य के सुप्रतिष्ठित अध्येता, आलोचक, संपादक एवं चिंतक हैं। उनका जन्म 10 नवम्बर, 1952 को गाज़ीपुर जिले के सुल्तानपुर ग्राम में हुआ। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। लगभग चार दशकों तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर के रूप में सेवाएँ प्रदान की और जून 2020 में सेवानिवृत्त हुए।

उनकी प्रमुख कृतियों में हिन्दी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, साहित्य और समय, कीर्तिलता और विद्यापति का युग, स्वामी सहजानंद सरस्वती और किसान आंदोलन, सुदामा पांडेय 'धूमिल', सीता की खोज तथा परंपरा की पहचान उल्लेखनीय हैं।

संपादक के रूप में उनके प्रमुख कार्यों में काव्य और अर्थबोध, त्रिलोचन की डायरी, कविता का शुक्ल पक्ष, नज़रुल की हिंदी कविताएँ, स्वामी सहजानंद और किसान आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि, हिंदी साहित्य ज्ञानकोश (सात खंड) तथा जब तक मनुष्य है कविता रहेगी, शामिल हैं। उन्होंने मेघदूत के गीत तथा मेरे गुरुदेव स्वामी विवेकानन्द—जैसा उन्हें देखा का अनुवाद भी किया है।

उन्हें भगवतशरण उपाध्याय सम्मान (2009), सावित्री त्रिपाठी-स्मृति सम्मान (2013), कबीर-विवेक सम्मान (2014), कल्याणमल लोढ़ा शिक्षा सम्मान (2022), नामवर सम्मान (2023) तथा रामविलास शर्मा शोध-सृजन सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया है।